बुंदेली होली व फाग उत्सव:-

बुंदेलखंड के बांदा में गांव-गांव में गोबर के कंडे, ओपल और बरूला(बल्ला) बनाए जाते है। होली पर इन्हीं कंडों को जलाकर लोग परंपरागत रूप से होली का पर्व मनाते हैं।हर साल यहां पर सात दिनों तक होली का पर्व मनाया जाता है।होलिका दहन (Holika Dahan) से लेकर बुढ़वा मंगल (आगामी मंगलवार) तक बुंदेलखंड के गांवों की चौपालों में फाग गायन, होली मिलन समारोह से लेकर अन्य कार्यक्रम होते हैं।इस दौरान भाई-दूज का पर्व और पंचमी महोत्सव, बुढ़वा मंगल भी मनाया जाता है। बुंदेलखंड की होली लोगों को पर्यावरण संरक्षण और लोक संस्कृति के संरक्षण का संदेश देती है।लेकिन वर्तमान समय में हमारी लोक संस्कृति/परंपरा विलुप्त हो रही है।इस परंपरा को पुनः बाहल करने हेतु मंगल भूमि फाउंडेशन के बैनर तले गांव गांव फाग उत्सव का आयोजन कराया जाता है।

बुंदेलखंड इलाके में फागुन के महीने में गांव की चौपालों में फाग की अनोखी महफिलें जमती हैं, जिनमें रंगों की बौछार के बीच अबीर-गुलाल से सने चेहरों वाले फगुआरों के होली गीत (फाग) जब फिजा में गूंजते हैं तो ऐसा लगता है कि श्रृंगार रस की बारिश हो रही है। फाग के बोल सुनकर बच्चे, जवान व बूढ़ों के साथ महिलाएं भी झूम उठती हैं। छोटे बच्चे नगाड़ा बजाकर फाग शुरू होने का ऐलान करते दिखाई देते हैं तो वहीं महिलाएं भी इस मस्ती से पीछे नहीं रहती हैं।वे भी एक-दूसरे को रंग-अबीर लगाती हुई फाग के विरह गीत गाकर माहौल को और भी रोमांचक बना देती हैं।वर्तमान समय में बहुत से गांवो में यह परंपरागत उत्सव (फाग उत्सव) नही होने लगे है।ऐसे में बुंदेली परंपरा और संस्कृति को बनाए रखने हेतु होली गीत (फाग) गाकर होली त्योहार मनाने हेतु लोगों को प्रेरित किया जा रहा है।।और छोटी-छोटी टोली में मोहल्ले स्तर में फाग उत्सव मनाया जा रहा है।

बुंदेलखंड क्षेत्र में सुबह हो या शाम, गांव की चौपालों पर सजने वाली फाग की महफिलों में केमिकल वाले रंगों की जगह टेसू के फूलों या महावरी रंगों का इस्तेमाल हमेशा से होता रहा है। लेकिन आधुनिकता, भौतिकतावादी समाज के चलते यह परंपरा खत्म सी हो गई है। इस परंपरा को पुनः बहाल करने हेतु,बुंदेलखंड क्षेत्र में फाग उत्सव का आयोजन होली गीत (फाग) सूखी होली (हर्बल गुलाल) के माध्यम से खेलने हेतु बढ़ावा दिया जा रहा है । क्योंकि बुंदेलखंड क्षेत्र हमेशा से पानी के संकट से सामना किया है। ऐसे में रंग (कलर) के माध्यम से होली खेलने

में रंग को छुड़ाने में लाखों लीटर पानी बर्बाद हो जाता है। इस वजह से फाग उत्सव के दौरान सूखी होली खेलने हेतु बढ़ावा दिया जा रहा है। होली का त्यौहार, फाग उत्सव से पहले गांव-गांव हर्बल गुलाल बनाने की प्रशिक्षण भी दिया गया है।

होली गीत (फाग) गाकर उत्सव मनाते ग्रामीण

(फाग उत्सव) मीडिया कवरेज

अंधाव गांव में फाग उत्सव की हुई शुरुआत

बांद ॥ प्रचंड शक्ति न्यूज)। स्थानीय संस्कृति परंपरागत त्योहार फाग का उत्सव धीरे-धीरे विलुप्त हो रहा है इस संस्कृति को बचाए रखने एवं होली में जल की बर्बादी न हो इसलिए सूखी होली (हर्बल गुलाल)से होली मनाने हेतु गांव में लोगो को प्रेरित किया जा रहा है।मंगल आश्रम में आज से बुढ़वा मंगल तक फाग उत्सव में कलाकार भक्तिपूर्ण होली गीत गायेंगे, नृत्य और नाटक करेंगे यह पूरा भव्य आयोजन भगवान कृष्ण और राधा रानी के लिए समर्पित रहेगा।जल मित्र देवगुलाम यादव ने कहा कि गांव में जो पुराने लोग बचे है थोड़ा त्योहार होली के दिन फाग का उत्सव कर लेते है लेकिन नई पीढ़ी के लोगो खास तौर में युवाओं में ऐसे आयोजन से परंपरा से भाग रहे है। मंगल भूमि फाउंडेशन इकाई के अध्यक्ष राजा भैया ने कहा कि वैश्वीकरण के चलते हमारे जी स्थानीय परंपराएं और संस्कृति में कुठाराघात हुआ है।हमें अपने त्योहार और उत्सव को अपने तरीके से मनाना होगा सामाजिक समरसता का यह त्योहार आज हुडदंगी तक सीमित हो गया है। इसलिए गांव में पुरानी परंपरा को बहाल करने की शुरुवात की गई है इसमें युवकों भी जोड़ने का प्रयास किया जायेगा।

अधांव गांव में फाग उत्सव मनाते ग्रामीण • खबरीलाल

फाग उत्सव में उड़ा रंग और गुलाल, गीतों पर झूमे लोग

जागरण संवाददाता, बांदा: मंगलवार से अंधाव गांव में फाग उत्सव की शुरूआत हो गई। पहले दिन सूखी होली खेलने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया गया। इसके साथ ही फाग गीतों पर ग्रामीण झूमते रहे।

होली पर होने वाले फाग का उत्सव धीरे-धीरे विलुप्त हो रहा है। इस संस्कृति को बचाए रखने एवं होली में जल की बर्बादी न हो इसलिए सूखी होली (हर्बल गुलाल) से खेलने के लिए ग्रामीणों को प्रेरित किया गया। मंगल आश्रम में आज से बुढ़वा मंगल तक फाग उत्सव में कलाकार भक्तिपूर्ण होली गीत गाएंगे। इसके साथ ही नृत्य और नाटक करेंगे। यह पूरा आयोजन भगवान कृष्ण और राधा रानी को समर्पित रहेगा। जल मित्र देवगुलाम यादव ने कहा कि गांव में जो पुराने लोग बचे हैं। वह होली के दिन फाग का उत्सव कर लेते हैं लेकिन नई पीढ़ी के लोगो खास तौर में युवाओं में ऐसे आयोजन से परंपरा से भाग रहे हैं। मंगल भूमि फाउंडेशन इकाई के अध्यक्ष राजा भैया ने कहा कि वैश्वीकरण के चलते स्थानीय परंपराएं और संस्कृति पर कुठाराघात हुआ है। हमें त्योहार और उत्सव को अपने तरीके से मनाना होगा। सामाजिक समरसता का यह त्योहार आज हुडदंगी तक सीमित रह गया है। इसलिए गांव में पुरानी परंपरा को बहाल करने की शुरूआत की गई है। इसमें युवकों भी जोड़ने का प्रयास किया जाएगा। यहां दुर्गा विश्वकर्मा, मनीष तिवारी, प्रेम, कालका, शिव गोपाल, नंदकिशोर, प्रांशु, राजन, ब्रजकिशोर, राम नरेश आदि लोग रहे।

Phag Utsav started in Andhav village

Staff Reporter

Banda: Local culture The celebration of Phag, a traditional festival, is gradually becoming extinct. In order to preserve this culture and to avoid wastage of water during Holi, people in the village are being motivated to celebrate Holi with dry Holi (herbal gulal). Artists will sing devotional Holi songs, dance and drama in the Phag Utsav in the Ashram from today till Budhwa Mangal. This entire grand event will be dedicated to Lord Krishna and Radha Rani. Jal Mitra Devgulam Yadav said that the old people left in the village will have a little festival. On the day of Holi, we celebrate Faag but the people of the new generation, especially the youth, are running away from tradition by organizing such events. Raja Bhaiya, President of Mangal Bhoomi Foundation Unit, said that due to globalization our local traditions and culture have been eroded. We have to celebrate our festivals and celebrations in our own way. This festival of social harmony has today become limited to hooliganism. Therefore, a start has been made to restore the old tradition in the village. Efforts will also be made to involve youth in this. In the beginning of Phag Utsav, people like Durga Vishwakarma, Manish Tiwari, Prem, Kalka, Shigopal, Nandkishore, Pranshu, Rajan, Brajkishore, Ram Naresh etc. were present.

अधांव में शुरू हुआ फाग उत्सव, सप्ताह भर रहेगी धूम

सूखे व हर्बल गुलाल की होली खेलने की दी जा रही प्रेरणा

संवाद न्यूज एजेंसी

अधांव गांव में फाग उत्सव पर होली गीत गाते ग्रामीण। संवाद

बांदा। बबेरू के अंधाव गांव में मंगलवार से फाग उत्सव की शुरुआत की गई। ग्रामीणों को हर्बल व सूखी होली के लिए जागरूक किया जा रहा है।

स्थानीय संस्कृति परंपरागत त्योहार फाग का उत्सव धीरे-धीरे विलुप्त हो रहा है। इस संस्कृति को बचाए रखने एवं होली में जल की बर्बादी न हो, इसके लिए सूखी (हर्बल गुलाल) होली मनाने के लिए गांव में लोगो को प्रेरित किया जा रहा है।

मंगल आश्रम में बुढ़वा मंगल तक फाग उत्सव होगा। कलाकार भक्तिपूर्ण होली गीत गाएंगे। नृत्य और नाटक प्रस्तुत करेंगे। जल मित्र देवगुलाम यादव ने बताया कि गांव में जो बुजुर्ग हैं, वह होली के दिन फाग का उत्सव करते हैं, लेकिन नई पीढ़ी के युवा ऐसे आयोजन व परंपरा से भाग रहे हैं।

मंगल भूमि फाउंडेशन इकाई अध्यक्ष राजा भैया ने कहा कि वैश्वीकरण के चलते हमारे जी स्थानीय परंपराएं और संस्कृति में कुठाराघात हुआ है।

हमें अपने त्योहार और उत्सव को अपने तरीके से मनाना होगा। सामाजिक समरसता का यह त्योहार आज हुडदंगी तक सीमित हो गया है।

- https://www.livehindustan.com/uttar-pradesh/banda/story-phag-festival-begins-in-banda-will-continue-till-budhwa-mangal-9575767.html

- https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/banda/phag-utsav-started-in-adhaan-the-fun-will-last-throughout-the-week-banda-news-c-212-1-sknp1006-108356-2024-03-20